रेड सॉइल स्प्रिंग | अ नेचर मैग्ज़ीन फॉर चिल्ड्रन

रेड *सॉइल* स्प्रिंग 7-12 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए प्रकृति पर केन्द्रित अँग्रेज़ी पत्रिका है। इस पत्रिका की संकल्पना अमृता प्रीतम (सह-संस्थापक और प्रधान सम्पादक) और सेन्थिल नाथन (सह-संस्थापक और रचनात्मक निदेशक) ने की थी। वे चाहते थे कि इसके माध्यम से बच्चों को प्राकृतिक दुनिया से जोड़ा जा सके और उन्हें यह समझाया जा सके कि कैसे और किन तरीक़ों से मनुष्य और प्रकृति पृथ्वी ग्रह पर जीवन का जाल बुनते हैं।





सेन्थिल नाथन से लर्निंग कर्व की सह-सम्पादक *शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता* की बातचीत

शेफ़ाली : पहले रेड सॉइल नेचर प्ले अस्तित्व में आया इसलिए उसी से शुरू करते हैं। तेज़ी से बढ़ते हुए महानगर में, जहाँ बच्चों को प्रकृति का अनुभव करने का विरले ही मौक़ा मिलता है, वहाँ बच्चों के लिए ऐसा अनूठा खेलने का स्थान बनाने के पीछे क्या प्रेरणा रही है?

सेन्थिल : जब हम माता-पिता बने, हमने महसूस किया कि शहरी क्षेत्रों में बच्चों के खेलने के लिए प्राकृतिक वातावरण का अभाव है। बच्चों के पास पेड़ पर चढ़ने, घास की ढलान पर लुढ़कने, रेत में खुदाई करने या चींटी की पगडण्डियों के पीछे-पीछे जाने के अवसर नहीं मिल पाते हैं। बच्चों का ख़ाली वक़्त शॉपिंग मॉल, मोबाइल फ़ोन और वीडियो गेम के आस-पास ही बीतता है और यही उनकी मनोरंजक गतिविधियाँ होती हैं जो कि निष्क्रियता, हताशा और आक्रामकता को जन्म देती हैं। हमने उन्हें प्रकृति के साथ वक़्त बिताने से मिलने वाले आनन्द से वंचित कर दिया है। अफ़सोस की बात यह है कि यह स्थिति ऐसे लोगों को पैदा कर रही है जिन्हें अपनी धरती का न तो कोई ज्ञान है और न ही उसके प्रति कोई जागरूकता।

जब हमने एक शहर में प्राकृतिक वातावरणों की आवश्यकता को समझा, तो 2016 में बच्चों के लिए एक प्राकृतिक ठौर-ठिकाना विकसित करने का बीड़ा उठाया जिसे हम रेड सॉइल *नेचर प्ले* कहते हैं और जो बेंगलूरु में स्थित है। यहाँ बच्चे ख़ुद को प्रकृति में तल्लीन कर सकते हैं और प्राकृतिक परिवेश का अनुभव करते हुए विस्मित हो सकते हैं, खोजबीन कर सकते हैं और उससे एक रिश्ता बना सकते हैं।

रेड सॉइल नेचर प्ले, जो लगभग दो एकड़ भूमि में फैला है, बेंगलूरु शहर में प्रकृति और बच्चों को जोड़ने वाला पहला प्राकृतिक खेलने का स्थान (nature play habitat) है। स्थानीय पेड़ और विविध प्रकार की सब्ज़ियाँ, अनाज, जड़ी-बूटियाँ और पौधे लगाकर इस बंजर भूमि को उपजाऊ बनाया गया। यह एक स्थाई परिवेश है जहाँ निर्मित संरचनाएँ प्राकृतिक निर्माण-सामग्री से बनी हैं और वर्षा जल संचयन व कम्पोस्ट खाद बनाने की टिकाऊ व्यवस्थाएँ अपनाई जाती हैं। यह बाल मन को शान्त और स्थिर ढंग से प्रकृति को खोजने और अनुभव करने के लिए प्रेरित और उत्साहित करता है। यहाँ पर प्राकृतिक खेल में अपार मौक़े बच्चों की रूचि के अनुसार उपलब्ध हैं। बच्चे दौड़ सकते हैं, पेड़ों पर चढ़ सकते हैं, पत्थरों और शिलाखण्डों पर कूद सकते हैं, पानी में या कीचड़ के साथ खेल सकते हैं, तितलियों, पक्षियों व जलीय पौधों को देख सकते हैं और सुरंगों में दौड़ सकते हैं।

शेफ़ाली : प्रकृति पत्रिका, रेड *सॉइल* स्प्रिंग, भारत में अपनी तरह की पहली पत्रिका है। इसके पीछे क्या विचार था?

सेन्थिल : जब महामारी आई, तो रेड सॉइल *नेचर प्ले* को अस्थाई रूप से बन्द करना पड़ा। जब हम बच्चों के लिए प्रकृति के चमत्कारों को दिखाने के लिए अन्य तरीक़ों के बारे में सोच रहे थे, तब हमें इस पत्रिका का ख़्याल आया।

रेड *सॉइल* स्प्रिंग पत्रिका काम करने का ऐसा एक और माध्यम है, जिसके द्वारा हम बच्चों को अपने पृथ्वी ग्रह के बारे में आकर्षक जानकारी प्रदान करते हैं। हम इस पत्रिका के माध्यम से अधिक-से-अधिक बच्चों तक पहुँचने का इरादा रखते हैं। हमारे प्राकृतिक खेल परिवेश, रेड सॉइल *नेचर प्ले* ने जनवरी 2022 में अपनी गतिविधियाँ फिर से शुरू कर दी हैं और वह आगन्तुकों के लिए खुला है।

शेफ़ाली : जब आपने इसे बच्चों को प्रकृति से जोड़ने के ऐसे पुल के रूप में देखा, जहाँ उन्हें प्रकृति का अनुभव करने और ख़ुद को उसमें तल्लीन करने के अवसर दिए जा सकें तो आपके दिमाग़ में प्रकृति संरक्षण का एक बड़ा उद्देश्य ज़रूर रहा होगा जिस पर आज सबको सम्मिलित रूप से ध्यान देने की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। छोटी उम्र के पाठकों को यह सन्देश देना कितना आसान या कठिन है कि उनके मन में 'प्रलय की चिन्ता' पैदा किए बिना अपेक्षित प्रभाव डाला जा सके?

सेन्थिल : रेड *सॉइल* स्प्रिंग के माध्यम से हम जो ज्ञान सामने लाते हैं उसका उद्देश्य बच्चों में प्रकृति को देखने के तरीक़े और अपने वातावरण के प्रति सम्मान के लिए एक मज़बूत बुनियाद तैयार करना है। रेड *सॉइल* स्प्रिंग अगली पीढ़ी के बच्चों को सामाजिक परिवर्तन करने वाले और पृथ्वी की देखभाल करने वाले बनने के लिए प्रेरित करती है। हम बच्चों तक यह बात पहुँचाने की आशा करते हैं कि हम सब जीवन के ताने-बाने में जुड़े हुए हैं और यह परस्पर जुड़ाव ही हमारे जीवन को बनाए रखता है।

शेफ़ाली : पत्रिका को खोलते ही सबसे पहले जो बात ध्यान आकर्षित करती है वह है इसके आकर्षक चित्र, मानो यह प्रकृति की ख़ूबसूरती और उसके अजूबों को सजीव कर रही हो।

सेन्थिल : हाँ यह बच्चों के लिए पत्रिका को आकर्षक बनाने के उद्देश्य से लिया गया एक सोचा-समझा निर्णय था। बच्चे दुनिया में आनन्द और प्रेम से भरे हुए आते हैं। यदि वे प्रकृति के बारे में जानकारी और ज्ञान से भरे हों या यूँ कहें कि उससे सशक्त हों तो वे स्वाभाविक रूप से प्रकृति की देखभाल करना चाहेंगे।

शेफ़ाली : यह जानते हुए कि पढ़ने की संस्कृति काफ़ी सीमित है आपने एक पत्रिका निकालने का फ़ैसला किया। आप किस तरह उम्मीद करते हैं कि यह पत्रिका ज़्यादातर बच्चों तक पहुँचेगी? क्या आप स्कूल के पुस्तकालयों और बच्चों के रीडिंग समूहों तक पहुँच रहे हैं?

सेन्थिल : हम सोचते हैं कि जब विषयवस्तु देखने में आकर्षक होती है और वर्णन दिलचस्प होता है तो बच्चे उसे पढ़ना ही चाहते हैं। यह पत्रिका उन शुरुआती पाठकों को भी प्रोत्साहित करती है जो साहित्यिक दुनिया में चलना शुरू कर रहे हैं। यह हमें कहानियों और कविताओं जैसे विभिन्न रोचक वर्णनों के माध्यम से बच्चों तक पहुँचने का मौक़ा देती है। इसके भीतर मौजूद कला और चित्र बच्चों को देखने में आकर्षक लगते हैं और इसमें दी गई प्रकृति से जुड़ने वाली गतिविधियाँ वे जब भी चाहें कर सकते हैं। पत्रिका में वे जो देखते हैं उसे दर्ज करने के लिए प्रकृति की डायरी के पन्ने (nature journaling pages) हैं और यह एक निजी प्रकृति पुस्तक

की तरह है। इसके अलावा, बच्चे अपनी गति से पत्रिका पढ़ सकते हैं और इसे पढ़ाए जाने की आवश्यकता नहीं है। रेड सॉइल स्प्रिंग केवल एक पत्रिका नहीं है, यह एक संग्रहणीय वस्तु है।

वर्तमान में, हम बहुत सारे स्कूल पुस्तकालयों और रीडिंग समूहों तक पहुँच रहे हैं और हमें उनसे बहुत सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है।

शेफ़ाली : क्या आप सोचते हैं कि महानगरों व बड़े शहरों के बच्चों व छोटे शहरों और गाँवों के बच्चों के बीच प्राकृतिक वातावरण को देखने के ढंग में अन्तर है? क्या यह पत्रिका क़स्बों और शहरों में रहने वाले बच्चों पर अधिक केन्द्रित है जिनके प्रकृति के अनुभव और उसके साथ जुड़ाव सीमित हैं?

सेन्थिल : हाँ, शहरों और छोटे क़स्बों में बच्चे प्रकृति को कैसे देखते हैं, इसमें अन्तर है। शहरों में प्रदूषण, ट्रैफिक जैम, कंक्रीट की ज़्यादा इमारतें और कम हरे-भरे स्थान हैं। अधिकांश स्कूल छोटे स्थानों में सीमित हैं और परिणामस्वरूप उनमें बाहरी परिवेश बहुत कम या बिल्कुल नहीं होता।

यह पत्रिका हर तरह के वातावरण में बड़े हो रहे बच्चों के लिए बनाई गई है, चाहे शहरी हों या ग्रामीण। हालाँकि गाँवों में बच्चों के पास अधिक हरे-भरे स्थान हो सकते हैं लेकिन जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं के प्रभावों का असर दुनिया भर में सभी पर समान रूप से पड़ता है। उदाहरण के लिए, यदि अमेज़न वर्षावनों को काटा जा रहा है, तो यह पृथ्वी को गर्म करता है; अगर ध्रुवीय बर्फ़ पिघलती है तो यह अकारण बाढ़ और सूखे की ओर ले जाती है।

या मान लीजिए कि जब बच्चों को यह पता चले कि ताड़ के तेल के उत्पादन के कारण उन एकमात्र जंगलों को नष्ट किया जा रहा है जहाँ ओरांगगुटान रहते हैं तो बड़े होने पर वे उस उत्पाद को न ख़रीदने का सचेत निर्णय कर सकते हैं। वयस्कों के रूप में, यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि बच्चों को प्राकृतिक दुनिया के साथ क्या हो रहा है, इसके बारे में बताएँ और उन्हें बेहतर भविष्य बनाने के लिए ज़रूरी ज्ञान दें।

शेफ़ाली : स्कूल में पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में बच्चों के लिए प्रकृति और प्राकृतिक दुनिया पर विभिन्न प्रकार के विषय होते हैं। यह पत्रिका किस तरह इसके परे जाती है? छोटी उम्र के पाठकों को जोड़ने के लिए आप किन बातों पर ध्यान देते हैं?

> *"पत्रिका की सामग्री सूचनाओं से भरी है और इसने मेरे आठ साल के बच्चे को बहुत-सी चीज़ों के बारे में बहुत उत्सुक बना दिया है। मेरे दोनों बच्चों को रंग-बिरंगे पन्नों और तस्वीरों को देखने में बहुत मज़ा आया। वे इसे एक बार पढ़ने के बाद कई बार और पढ़ते हैं!"*
>
> *- दीपा सैम, अभिभावक*

> *"रेड सॉइल स्प्रिंग प्रकृति के बारे में बच्चों की एक नई पत्रिका है जो सभी उम्र के लोगों की कल्पना पर सवार हो जाएगी। रेखाचित्रों, चित्रकारी और अद्भुत तस्वीरों से सुसज्जित यह पत्रिका कौतूहल की एक बड़ी खिड़की खोल देगी और विस्मय के भाव को प्रेरित करेगी और साथ ही मज़ेदार भी बनी रहेगी। पत्रिका का भविष्य निश्चित रूप से उतना ही उज्ज्वल होगा जितना कि इसके पहले अंक की विषयवस्तु।"*
>
> *- रिचर्ड लूव, लास्ट चाइल्ड इन द वुड्स, अवर वाइल्ड कॉलिंग और अन्य पुस्तकों के लेखक।*

सेन्थिल : पत्रिका में ऐसी कई चीज़ें हैं जो स्कूली पाठ्यक्रम से परे हैं। उदाहरण के लिए, प्रत्येक अंक में किसी देश के किसी विशेष मौसम के बारे में एक कहानी होती है। इसके माध्यम से बच्चे उस देश की संस्कृति, मौसमी बदलावों और उस मौसम के दौरान वहाँ रहने वाले लोगों के जीवन के बारे में जानते हैं। पत्रिका में एक सुन्दर कथा के माध्यम से प्रकृति में संगीत के बारे में एक खण्ड मौजूद है। तथ्यात्मक ज्ञान से परे, रेड *सॉइल* स्प्रिंग अपनी सामग्री को रचनात्मक तरीक़े से प्रस्तुत करती है।

पत्रिका के लिए सामग्री का चयन उसके अर्थ और उद्देश्य के लिए बड़े ध्यान से किया जाता है। पत्रिका का पहला भाग पृथ्वी के बारे में खोजबीन करता है और दूसरा भाग 'नो योर को-हैबिटैंट्स' जानवरों और पौधों के जीवन और उनके आवासों की गहरी छानबीन करता है।

अगले खण्ड 'कनेक्ट विथ द अर्थ' में टिकाऊ जीवन कौशलों, प्रकृति-आधारित कला (nature art) और प्रकृति में डूब जाने के अनुभवों से सम्बन्धित ख़ुद से करने वाली (DIY) प्रकृति सम्बन्धी गतिविधियाँ दी गई हैं। उदाहरण के लिए, हमारे ताजा अंक रेड *सॉइल* स्प्रिंग — ब्लॉसम्स के इस भाग में 'मेकिंग फ्लावर टी' 'प्रेसिंग फ्लावर्स एंड लीव्ज़' और 'बर्ड वॉचिंग' की गतिविधियाँ थीं। अन्तिम खण्ड 'सेलिब्रेट नेचर' प्रकृति में संगीत की खोज करता है, इसमें एक प्रकृति की कहानी, प्रकृति की कविता और प्रकृति से जुड़े शब्द की खोज (nature word search) भी होती है। इसमें उस महीने के एक असाधारण प्रकृतिवादी के बारे में भी बात होती है जिसके जीवन और कार्य ने दुनिया को एक बेहतर जगह बनाई। हर महीने मनाए जाने वाले महत्त्वपूर्ण प्रकृति दिवसों के बारे में भी एक खण्ड है।

सामग्री बच्चों की पठनीयता के हिसाब से तैयार की जाती है। बनावट आकर्षक होती है। कला और चित्रों को इस ढंग से प्रस्तुत किया जाता है कि बच्चों की कल्पना को पंख दिए जा सकें और उनकी उत्सुकता को उभारा जा सके।

अनुवाद : बीरेन्द्र पाण्डे **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय